पर्वत की चोटी चोटी पे ज्योति

धुन- पर्वत के पीछे चम्बे का गाँव

पर्वत की चोटी, चोटी पे ज्योति,
ज्योति दिन रात जलती है ॥
हो,,, झिलमिल सितारों की, ओढ़े चुनर माँ,
शेर पे सवार मिलती है,
ज्योति दिन रात जलती है ।

लाल चुनरिया, लाल घगरिया, माँ के मन भाए ॥
लाल लांगुरिया, लाल ध्वजा, मईया की लहराए ।
करे नजरिया, जिसपे मईया, भाग्य चमक जाए,
है इतनी भोली, भरती है झोली,
पूरा हर सवाल करती है,,,
पर्वत की चोटी,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

स्वर्ग से सुन्दर, भवन बना, माँ का प्यारा प्यारा ॥
साँची माता, रानी का है, ये साँचा द्वारा ।
अजब नजारा, जगदम्बे का, है जग से न्यारा,
दुष्टों को मारे, भक्तो को तारे,
मईया चमत्कार करती है,,,
पर्वत की चोटी,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

तीनो लोकों, में बजता, भोली माँ का डंका ॥
दसों दिशाएं, गूंजे बाजे, चौरासी घंटा ।
ढोल नगाड़े, बजे भवन में, मिटती हर शंका,
संग में बजरंगी, लांगुर सत्संगी,
मईया लेके साथ चलती है,,,
पर्वत की चोटी,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

स्वर : कुमार विशु

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/24387/title/parvat-ki-choti-choti-pe-jyoti

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |